International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232, Impact Factor: RJIF 5.22
www.hindijournal.com
Volume 3; Issue 2; March 2017; Page No. 119-120

प्रेमचंद कथा साहित्य में, मातृत्व के विविध रूपों में नारी

प्रमिला देवी

प्राध्यापिका, कन्या महाविद्यालय, खरखौदा, सोनीपत, हरियाणा, भारत।

प्रस्तावना

बीसवीं शताब्दी के पहले स्त्री, शिक्षा, स्वतंत्रता तथा सम्पत्ति के सभी अधिकारों से वंचित थी । भारतेंदु युग और द्विवेदी–युग में नारी समस्याओं, बाल–विवाह, अनमेल–विवाह, दहेज प्रथा, विधवाओं की दुर्दशा आदि की भर्त्सना की गई तथा स्त्री–शिक्षा, स्त्री स्वतंत्रता जैसे नवीन विषयों को उठाया गया, किंतु इनमें नारी के प्रति उदात्त भावों की अभिव्यंजना का सर्वथा अभाव रहा । सर्वप्रथम छायावादी कवियों ने नारी को संवेदनशील भावना से देखा और यथार्थ चित्रण एवं मानवतावाद के धरातल पर जो चित्र अंकित किए, उनमें सेवाभाव, दया, ममता संयम, सहिष्णुता, प्यार, त्याग, साहस एवं प्रेरणा के गुणों का प्राधान्य है ।

प्रेमचंद जी के कथा साहित्य में नारी इन्हीं सब गुणों को संजोए हुए वर्णित हुई है । इन सब गुणों में मातृत्व अर्थात् ममता नारी का सर्वोत्कृष्ट गुण माना जाता है । प्रेमचंद जी के नारी पात्रों ने इस गुण को अपनाकर जीवंत नारी, माता के रूप में प्रकट होते हैं । ओम अवस्थी ने प्रेमचंद के कथा–साहित्य में वर्णित नारी की विशेषताओं को विश्लेषित करते हुए लिखा भी है –''बीसवीं शताब्दी तो है ही नारी के विलुप्त रूप की पहचान का अध्याय, जिसके आरम्भ में प्रेमचन्द का अपूर्व योगदान समाज की वेदना का ही प्रतिरूप है ।''[1]

यहाँ यह बात विशेष धयातव्य है कि प्रेमचन्द की नारियॉ उन सामान्य नारियों का ही प्रतिनिधित्व करती है, जिनमें मानवोचित दुर्बलताएँ भी विद्यमान हैं । रामविलास शर्मा के अनुसार ''प्रेमचंद के कथा–साहित्य के चरित्रों में दृष्टिगत होने वाले विरोधी गुणों, कला और मनोविज्ञान की बारीकी इस बात में दिखाई देती हैं कि वह उसे न तो पहले राक्षस बनाकर खड़ा करते हैं और ना बाद में देवता बना देते हैं ।''[2] इस प्रकार प्रेमचंद के नारी पात्रों को एक ओर उदात्त गुणों के परिप्रेक्ष्य में तथा दूसरी ओर मानवीय दुर्बलताओं के परिप्रेक्ष्य में निरखा परखा है ।

नारी पात्रों की प्रवृति और रूप विशेषताओं की प्रधानता के आधार पर आलोचकों ने प्रेमचंद के कथा–साहित्य की नारियों के मातृत्व रूप को विभिन्न वर्गो में विभाजित किया है।'' प्रेमचंद के कथा–साहित्य में चित्रित नारी के जिस रूप को आलोचकों ने सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण एवं गरिमामय माना, वह है उसका मातृत्व रूप''[3] नारी की चरमता उसके मातृत्व में है एवं नारी का सबसे श्रेष्ठ और त्यागपूर्ण स्वरूप उसके मातृत्व रूप में ही निहित है । वस्तुतः नारी के मातृत्व रूप की प्रशंसा का कारण स्वयं 'गोदान' में वर्णित प्रेमचंद के नारी विषयक विचार हैं । ''नारी केवल माता है और इसके उपरांत वह जो कुछ भी है वह मातृत्व का उपक्रम मात्र है । मातृत्व संसार की सबसे बड़ी साधना है, सबसे बड़ी तपस्या, सबसे बड़ा त्याग और सबसे महान विजय है ।''[4] आलोचकों द्वारा मातृत्व के गुणों को तीन श्रेणियों वर्गीकृत किया गया है:–

1– माता का देश–प्रेमी रूप :– नारी के मातृत्व रूप के जो विभिन्न वर्ग बनाए गए उनमें सपूतों से कर्त्तव्य साहस तथा देश–प्रेम की मॉग करने वाली माताओं को विशिष्ट मातृत्व वर्ग में रखा गया तथा ''इस वर्ग के अन्तर्गत 'रंगभूमि' की जाह्नवी 'धिक्कार' कहानी की पुजारिन एवं 'वरदान' कहानी की सुवामा का उल्लेख किया गया ।''[5] ये सभी माताएं वत्सलभाव से अधिक महत्त्व जाति तथा राष्ट्र की सेवा करने वाले पुत्रों को देती हैं । उनके पुत्र पूरे देश के लिए होते हैं देश पुत्र के लिए नहीं होता । इसमें 'रंगभूमि' की जाह्नवी का मातृत्व रूप सर्वाधिक विवादस्पद माना गया, क्योंकि अधिकांश आलोचकों ने देश–प्रेम संयुक्त उसके नारी रूप के सम्मुख उसके नारी रूप के सम्मुख उसके मातृत्व रूप को गौण माना । डॉ. गीता लाल लिखती हैं – ''रानी जाह्नवी की दृष्टि में देशहित और जाति सेवा का इतना महत्त्व है कि उनके वचन और कर्म से यह अनुमान करना कठिन है कि वे वात्सल्यमयी माता भी है ।''[6] ओम अवस्थी जाह्नवी के लिए लिखते हैं – ''राजपूत रानी होने के नाते रानी को आत्म–सम्मान प्रिय है तथा आत्म–गौरव की रक्षा के समक्ष पुत्र रक्षा को भी हेय समझती है ।''[7] कुल मिलाकर जाह्नवी मातृत्व–गुण सम्पन्न नारियों से नितान्त भिन्न है, जैसे– 'धिक्कार' कहानी की पुजारिन एवं 'वरदान' की सुवामा । परवर्ती नारियों में देश–प्रेम आदि का भाव पुत्र–प्रेम के समानान्तर चलता है, जबकि जाह्नवी का चरित्र इस दृष्टि से अपवाद है । सिद्धांत के आगे वह पुत्र–प्रेम को नगण्य मानती है । प्रेमचंद द्वारा वर्णित मातृत्व की परिधि के अन्तर्गत आलोचकों ने स्व–सिद्धांतों पर अटल रहने वाली देश–प्रेम की भावना से युक्त माताओं का ही नहीं, वरन् पुत्र–प्रेम का भी वर्णन किया।

माता का पर–बालक विषयक प्रेमः

मदन गोपाल ने ''प्रेमचंद की कहानियों का आलोचनात्मक अध्यन करके जिन तीन कहानियों – 'माता का हृदय', 'महातीर्थ', तथा 'कातिल की माँ' के आधार पर नारी के मातृरूप के प्रति भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की है।''[8] उनमें माताओं की ममता का नया रूप मिलता है । यह ममता स्वपुत्र हितार्थ न होकर पर–पुत्र रक्षार्थ दर्शायी गई है । 'माता का हृदय' कहानी में अपने एकमात्र पुत्र की हत्या करने वाले पुलिस अधिकारी के बेटे से चाहकर भी एक मॉ प्रतिशोध नहीं ले पाती, उसका मातृत्व आड़े आ जाता है । इसी भाँति 'महातीर्थ' कहानी में दूसरे के बच्चे की बीमारी की सूचना पाकर उसे मातृवत् प्रेम करने वाली बुढ़िया दाई कैलाशी अपनी यात्रा स्थगित कर देती है । 'कातिल की मॉ' कहानी में नारी की न्यायप्रियता की पृष्ठभूमि में एक माँ । के मन का न्याय छलकता है । वह अपने दुष्ट बेटे को किसी की हत्या करते देखती है तो उसके विरूद्ध गवाही देती है, उसके अन्तर्मन में विद्यमान मॉ की ममता यह नहीं चाहती कि किसी दूसरी मॉ का निर्दोष बच्चा व्यर्थ ही इस अपराध का दोषी बन जाए ।

उपर्युक्त कहानियों में 'माता का हृदय' तथा 'कातिल की मॉ' कहानियाँ अधिक उत्कृष्ट कोटि की मानी जाएँगी, क्योंकि इनमें नारी के मातृत्व का वह गरिमापूर्ण रूप मिलता है, जहाँ पहुँचकर नारी मन के प्रति मनोविज्ञान, सभी समीकरण बौने हो जाते हैं । इन माताओं के लिए अपने बालक महत्त्वपूर्ण नहीं है, वरन् महत्त्वपूर्ण हैं

दूसरे के बालक और उनको मिलने वाला न्याय । इस प्रकार उच्च विचार के सम्मुख उन्हें अपनी ममता की कुर्बानी भी सहज स्वीकार्य है । आलोचकों ने संपूर्ण प्रेमचंद कथा साहित्य के आधार पर आधारित ऐसे अनेक नारी पात्र उद्धृत किए हैं, जो दूसरों के बच्चों को भी मातृत्व स्नेह देती हैं तथा उनका यह वात्सल्य किसी भी प्रकार से स्वमाता से कम महत्त्व नहीं रखता । उपन्यास क्षेत्र में 'निर्मला' की निर्मला, 'प्रेमाश्रम' की श्रद्धा, 'कायाकल्प' की वागेश्वरी, 'गबन' की जग्गो आदि इसी प्रकार के उत्कृष्ट उदाहरण हैं ।

नारी का विमाता रूप में मातृत्वः

नारी पात्रों के मातृ रूप के अन्तर्गत विमाता रूप भी विशेष चर्चा का केन्द्र रहा । ओम अवस्थी ने 'गृहदाह' कहानी की देवप्रिया के आधार पर सिद्ध किया कि विमाता कभी स्वमाता नहीं होती एवं प्रेमचंद ने माता के इस अमांगलिक रूप का चित्रण अपनी प्रधान कृतियों में तो किया ही नहीं, कहानियों में भी कम किया है ।'' उपर्युक्त आक्षेप कि विमाता कभी स्वमाता नहीं होती अंशतः तथ्यपूर्ण माना जा सकता है, पूर्णरूपेण नहीं । इसका कारण है कि प्रेमचंद द्वारा वर्णित विमाता भी कभी–कभी स्वमाता से बढ़कर ममतामयी दर्शायी गई है यथा 'विमाता' में विमाता अम्बा तथा 'निर्मला' में विमाता निर्मला । जहाँ तक विमाता की विमाता अम्बा का प्रश्न है डॉ. सत्येन्द्र उसके सहज स्वाभाविक ममतामय व्यवहार को प्रशंसनीय मानते हैं । यह बात अलग है कि इसकी पृष्ठ भूमि में 'विमाता' का प्रायश्चित भाव भी रेखांकित करते हैं । कहानी के विवेचन से यह निष्कर्ष निकलता है कि यह आक्षेप नितांत निराधार है कि विमाता कभी स्वमाता नहीं होती क्योंकि यह न केवल मुन्नू के मातृ–प्रेम पर वरन् दया तथा प्रेम की मूर्ति अम्बा की ममता पर पर प्रश्नचिह्न लगता है।

विमाता के अमांगलिक रूप का प्रेमचंद की प्रधान कृतियों में अभाव है, यह दूसरा आक्षेप भी तर्क सम्मत नहीं कहा जा सकता । डॉ. रामविलास शर्मा 'रंगभूमि' एवं 'कर्मभूमि' पर आधृत आलोचना में विमाता की अमांगलिक छवि का उद्घाटन करते हुए लिखते हैं –''रंगभूमि' उपन्यास में ताहिर अली और उसकी दो विमाताओं के संघर्ष का कारण है विमाताओं की धूर्तता और ताहिरअली का सीधापन ।''[9] 'कर्मभूमि' में भी एक स्थान पर इसी बात का संकेत मिलता है कि विमाता के आने से परिवार में कैसी–कैसी गुत्थियाँ पड़ जाती हैं, जिनका मनुष्य के चरित्र पर भी गहरा प्रभाव पड़ता है।

उपयुक्त आलोचनात्मक अध्ययन से यही स्पष्ट होता है कि प्रेमचन्द विमाता विषयक सभी छोटी बड़ी समस्याओं की तह में जाकर तत्संबधी सभी सम्भावित पहलुओं का यथार्थ एवं बेबाक चित्रण करते हैं, ताकि समाज इन कुरीतियों के प्रति जागरूक हो ।

संदर्भ

1. प्रेमचंद के नारी–पात्र, ओम अवस्थ, पृ0 16
2. प्रेमचन्द और उनका युग, डॉ. रामविलास शर्मा, पृ0 67
3. पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी, प्रेमचन्द और गोर्की (सं. शचीरानी गुर्टू), पृ0 94
4. डॉ0 त्रिलोकीनारायण दीक्षित, प्रेमचंद : चिन्तन और कला (सं. डॉ. इन्दुनाथ मदान), पृ0 225
5. प्रेमचन्द के नारी–पात्र, ओम अवस्थी, पृ0 53
6. प्रेमचन्द का नारी चित्रण, डॉ. गीतालाल, पृ0 164
7. प्रेमचंद के नारी पात्र, ओम अवस्थी, पृ0 161
8. प्रेमचंद, मदनगोपाल, पृ0 71–72
9. प्रेमचंद के नारी पात्र, ओम अवस्थी, पृ0 53
10. प्रेमचंद : आलोचनात्मक परिचय, डॉ. रामविलाश शर्मा पृ0 118